“तमस” और “आरोन कैदख़ाना”

ताकाहाशि आकिरा

जापान में भीष्म साहनी जी की कई रचनाओं का अनुवाद हो चुका है। उदाहरण के लिए "तमस" को हम लोग जापानी भाषा में भी पढ़ सकते हैं। लेकिन किसी विदेशी साहित्यिक रचना को उसकी पूरी ऐतिहासिक तथा सामाजिक पृष्ठभूमि के साथ समझना आसान काम नहीं है। इस कठिनाई के पीछे क्या-क्या कारण हो सकते हैं ? इन सब कठिनाइयों के बारे में बात करने का आज समय नहीं है। मैं सिर्फ एक उदाहरण देना चाहता हूँ। "तमस" में एक अँग्रेज़ डिप्टी कलेक्टर और उसकी जवान पत्नी का चित्रण किया गया है। वह कलेक्टर साहब घर के नौकरों के सामने अपनी पत्नी को बाँहों में भरकर प्रेम करने की कोशिश करता है। पति-पत्नी को बिल्कुल शर्म नहीं आती, क्योंकि वे सोचते हैं कि देखनेवाले सब भारतीय नौकर हैं।

> लीज़ा और रिचर्ड पहले ही की भाँति एक दूसरे की बाँहों से बँधे रहे। पहले-पहल, जब कभी खुले दरवाज़े में खड़े वे एक दूसरे से प्यार कर रहे होते और कोई खानसामा या नौकर किसी काम से आ जाता तो लीज़ा ठिठक कर अलग हो जाती थी, पर रिचर्ड उसे बाँहों में दबाये रखता, और खानसामा अपना काम करता रहता। झेंप के कारण लीज़ा अपनी आँखें बंद कर लेती ताकि वह खानसामे की उपस्थिति को भूली रहे। पर धीरे-धीरे वह समझ गई थी कि खानसामा एक नेटिव ही तो है, इस पर भी एक मामूली खानसामा है, इसलिए उसकी उपस्थिति को वह बाधा नहीं समझती थी। (“तमस”, पृ. 47)

आज मै एक जापानी सिपाही की चर्चा करना चाहता हूँ, जिसको डिप्टी कलेक्टर के घर के नौकर की तरह बिल्कुल समान बरताव का सामना करना पड़ा था । यह आज से ७० साल पहले की बात है।

जापान पूर्वी एशिया में एक ही ऐसा देश है जो १९ वीं और २० वीं शताब्दी के

साम्राज्यवादी युग में अपनी स्वतंत्रता को अंत तक कायम रख सका। लेकिन द्वितीय महायुद्ध की पराजय के बाद अनेक जापानी सैनिकों को युद्धबंदी बनकर सारी दुनिया में स्थापित कैदखानों में रहना पड़ गया। उदाहरण के लिए लाखों सैनिकों को १० या १२ साल के लंबे अरसे तक सायबेरिया के कैंपों में रहकर बेगार करनी पड़ी। कहा जाता है कि कम से कम १ लाख सिपाही बीमारी और भूख के कारण ठंड से थरथर कांपते हुए कुत्तों की मौत मर गए थे। उसी तरह बहुत से जापानी सैनिकों को म्यानमार के अँग्रेज़ी कैदख़ानों में बेगार करनी पड़ी। उन युद्धबंदियों में आइदा नामक २८ वर्ष का एक सिपाही भी था। सेना में भरती होने से पहले वह क्योतो विश्वविद्यालय में एक विद्यार्थी था। उसका विषय था यूरोपियन पुनर्जागरण का इतिहास। उन दिनों ३० साल के शादीशुदा पुरुषों को भी सैनिक दल की ओर से बुलावा आता था और कोई भी उस बुलावे का इनकार नहीं कर सकता था। आइदा का दल म्यानमार में भेजा जाता है। परंतु उनके पास यथेष्ट शस्त्र और बारूद न होने के कारण एक मुठभेड़ में बुरी तरह पराजित हो जाते हैं। आइदा के अनुसार उसके दल के कुल ५ प्रतिशत सिपाहियों की जान बची और बाकी सब लोगों ने वीरगति प्राप्त की थी। म्यानमार की लड़ाई की भीषणता को बताने के लिए लोग उस रास्ते को "अस्थियों का रास्ता" कहने लगे, जिस रास्ते से होकर थके-माँदे जापानी सैनिक भाग आते थे। क्योंकि वह रास्ता लाखों मृत जापानी सिपाहियों की अस्थियों से ढका पड़ा था। जंगलों में जापानी सिपाहियों की लाशों का ढेर हो गया था। आइदा सौभाग्य से बच तो गया, लेकिन उसे शस्त्र समर्पण करने के बाद अपनी उम्मीद के खिलाफ़ अपने साथी सैनिकों के साथ २ साल के लिए आरोन नामक एक कैंप में कैदी बनकर रहना पड़ा। वह सोचता था कि यूरोपियन पुनर्जागरण का विशेषज्ञ होने के नाते वह यूरोपियन संस्कृति और इतिहास के बारे में अच्छी तरह जानता है। लेकिन कैंप के अँग्रेज़ सिपाहियों के व्यवहार को देखते हुए उसके मन में यह संदेह होने लगता है कि अँग्रेज़ों के बारे में उसके मन में अब तक जो विचार थे वे सब गलत तो नहीं थे ? उनमें और जापानियों में इतना फ़र्क है कि एक दूसरे को समझना असंभव-सा प्रतीत होने लगता है।

एक दिन उसको अँग्रेज़ महिलाओं के कमरे की सफाई करने का आदेश दिया जाता है। कमरे के अंदर जाकर उसने देखा कि एक जवान अँग्रेज़ महिला एकदम नग्न होकर आईने के सामने खड़ी है, लेकिन वह महिला आइदा को देखकर भी अपनी नग्नता को छिपाने की कोशिश

बिल्कुल नहीं करती, जैसे वह अपने कमरे में अकेली हो। आइदा को महिला की इस प्रतिक्रिया से आश्चर्य होता है, लेकिन वह समझ जाता है कि उस महिला के लिए जापानी कैदी का कोई मूल्य नहीं है। उस महिला की दृष्टि में आइदा इतना नगण्य और तुच्छ था कि उसे आइदा की तरफ़ ध्यान देने की ज़रूरत ही नहीं सूझी। यह सोचकर भी आइदा खून का घूँट पीकर रह जाता है। वह कुछ नहीं कर सकता है।

आइदा कहता है कि अँग्रेज़ सिपाही जापानी कैदियों के साथ खुले आम हिंसात्मक व्यवहार नहीं करते। लेकिन जब करते हैं, तब बहुत ही कुशलतापूर्वक करते हैं और हमेशा इस बात का ख्याल रखते हैं कि बाद में कोई शिकायत करता है तब उसका जवाब भी ठीक से दिया जा सके। कैंप में कैदियों को इतना कम भोजन दिया जाता था कि भूख के मारे लोगों को ठीक से चलना भी मुश्किल हो जाता था, लेकिन दिया जाता था निश्चित नियम के अनुसार निश्चित मात्रा का खाना। उस नियम में और उस नियम का पालन करने में कोई ऐसी कमी या गलती नहीं थी, जिसके कारण अँग्रेज़ अफसरों को किसी प्रकार की सज़ा मिलने की संभावना हो। जब कभी कभी कुछ नर्म दिलवाले अँग्रेज़ सिपाही अपने सिगरेट के टुकड़े जापानी क़ैदियों को दे देते हैं, लेकिन हाथ से नहीं, हमेशा फ़र्श या ज़मीन पर फेंककर देते हैं। धीरे-धीरे जापानी सिपाहियों को अँग्रेज़ सिपाहियों के इस तरह के व्यवहार की आदत पड़ जाती है। आइदा भी उनमें से एक था। वे लोग अनजाने में अँग्रेज़ों को अपने से भिन्न किसी उच्च जाति के लोग मानने लगते हैं।

एक दिन आइदा कैंप से बाहर काम करने जाते हुए रास्ते में एक जवान बर्मी आदमी को पेट के बल पर पड़े हुए देखता है। वह एक अँग्रेज़ सिपाही को बुलाकर लाता है। वह सिपाही आते ही पड़े हुए आदमी के मुँह पर इतने ज़ोर से लात मारता है कि उस जवान आदमी की गर्दन की हड्डी टूट जाती है। अँग्रेज़ सिपाही कहता है, "finish"। उस अँग्रेज़ सिपाही के चेहरे पर एक शिकन भी नहीं आई।

एक जापानी क़ैदी अपनी आँखों देखी घटना के बारे में कहता है। डेढ़ सौ जापानी क़ैदियों को रहने के लिए नदी के किनारे एक छोटी-सी जगह दे दी गई थी। नदी में बहुत-से केकड़े रहते थे। सब लोग जानते थे कि इन केकड़ों के पेट में एक प्रकार के कीड़े रहते हैं, जिनके कारण केकड़े खानेवालों के पेट बुरी तरह ख़राब हो जाते हैं। लेकिन लोगों को खाना इतना कम दिया जाता था कि अपनी भूख मिटाने के लिए केकड़े खाने के सिवा कोई चारा न था। आखिर केकड़े खाते

खाते लोग बीमार होकर मरने लगे। सब लोगों के मरने के बाद अँग्रेज़ों ने एक रिपोर्ट लिखकर दे दी कि जापानी लोगों को सफ़ाई और स्वच्छता का बिल्कुल ज्ञान नहीं था। वे लोग हमारे रोकने के बावजूद नदी के गंदे केकड़े खाकर मर गए। इसमें हमारा कोई दोष नहीं है। रिपोर्ट में कोई झूठ नहीं था। आइदा फिर कहता है कि अँग्रेज़ लोग अक्सर कोई हिंसात्मक तथा अमानवीय काम खुलेआम नहीं करते। लेकिन जब करते हैं, तब वे बिल्कुल ठंडे दिमाग से और बड़ी सतर्कता से करते हैं। वह पाठकों से पूछता है कि इससे बढ़कर अमानवीय हिंसा क्या हो सकती है।

केवल एक सिपाही के व्यक्तिगत अनुभव के आधार पर मैं किसी देश के लोगों के बारे में कोई निष्कर्ष निकालना नहीं चाहता। मैंने आइदा के अनुभव की चर्चा इसलिए की है कि आप लोगों को "तमस" में चित्रित अँग्रेज़ पति-पत्नी की मनोवृत्तियों को समझने में थोड़ी-सी सहायता मिल जाए।

“तमस”, भीष्म साहनी, 1973, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
“आरोन कैदख़ना” , आइदा यूजि, 1962, च्यूको शिंशो, तोक्यो